Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 13
गुल्ली-डंडा - मुंशी प्रेमचन्द

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. इस कहानी में कथानायक विलायती खेलों का सबसे बड़ा ऐब क्या मानते हैं ?

(क) महँगा होना
(ख) सस्ता होना
(ग) चोट को डर
(घ) अधिक समय लगना

उत्तर: (क) महँगा होना

प्रश्न 2. कहानी में कथानायक और उसका मित्र गुल्ली-डंडा खेलने कहाँ गए ?

(क) रेलवे स्टेशन
(ख) पाठशाला
(ग) भीमताल
(घ) अस्पताल

उत्तर: (ग) भीमताल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कहानी में लेखक जिस मित्र से मिला, उसका नाम क्या है ?

उत्तर: कहानी में लेखक जिस मित्र से मिला , उसे मित्र का नाम गया है।

प्रश्न 2. कहानी का नायक बड़ा होकर क्या बनता है ?

उत्तर: बड़ा होकर कहानी का नायक इंजीनियर बनता है।

प्रश्न 3. कथानायक ने गया को गुल्ली-डंडा मैच देखने के लिए कब का समय दिया ?

उत्तर: कथानायक ने गुल्ली-डंडा का मैच देखने के लिए गया को शाम का समय दिया था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गया के व्यक्तित्व की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: गया के व्यक्तित्व की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. निर्धन, पतली, लम्बी काया का स्वामी, काला तथा कुरूप किशोर है।
2. गया गुल्ली-डंडा का कुशल तथा दक्ष खिलाड़ी है। गुल्ली उसकी पकड़ से कभी नहीं छूटती।
3. गया समझदार है। वह कहानी नायक का अफसर होने के नाते अदब करता है।

प्रश्न 2. कथानायक को गुल्ली-डंडा खेलों का राजा क्यों लगता है ?

उत्तर: गुल्ली-डंडा खेलों का राजा लगता है क्योंकि इस खेल के सामान महँगे नहीं हैं। किसी पेड़ से टहनी काटकर गुल्ली तथा डंडा बनाये जा सकते हैं। उसके लिए लॉन , कोर्ट, नेट, थापी आदि की जरूरत नहीं पड़ती। खिलाड़ियों की बड़ी टीम जरूरी नहीं होती। दो खिलाड़ी हों तो भी गुल्ली-डंडा खेला जा सकता है। इतनी खूबियों के कारण लेखक को गुल्ली-डंडा खेलों का राजा लगता है।

प्रश्न 3. खेल में पदने से बचने के लिए कथानायक क्या चालें चलता है ?

उत्तर: कथानायक नहीं चाहता कि गया उसको खेल में पदाये। वह पदने से बचने के लिए तरह-तरह की चालें चलता है। वह उसको एक दिन पहले खिलाये अमरूद की याद दिलाता है। तरह तरह की बेइमानी करता है। गया की खेलने की बारी नहीं आने देता। गुल्ली के थोड़ी दूर गिरने पर वह स्वयं उसको उठा लाता और दो बार डंडा लगाता। गुल्ली डंडे में लगती तब भी अनजान बनता। वह अँधेरे का बहाना बनाकर पदने से बचना चाहता है। .

THE HINDI PAGE जान कुछ नया www.thehindipage.com

प्रश्न 4. कथानायक के अनुसार बच्चों में ऐसी कौन-सी शक्ति होती है, जो बड़ों में नहीं होती ?

उत्तर: बच्चे मिथ्या को आसानी से सत्य बना देते हैं। बड़ों में इस प्रकार की शक्ति नहीं होती। बड़े तो सत्य को मिथ्या बना लेते हैं परन्तु बच्चों की तरह मिथ्या को सत्य नहीं बना सकते।

प्रश्न 5. कथानायक और गया के बीच स्मृतियाँ सजीव होने में कौन-सी बात बाधा बनती है ? और क्यों ?

उत्तर: कथानायक अब एक उच्च पद पर था। गया एक मामूली साईस था। दोनों के बीच पद और प्रतिष्ठा का बड़ा अन्तर था। जब कथानायक गया के सामने आता था तो वह समझ जाता था कि अब बचपन की तरह उनमें समानता नहीं थी। इस पद और प्रतिष्ठा के अंतर के कारण उनकी स्मृतियाँ सजीव नहीं हो पाती थीं।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गुल्ली-डंडा कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि पद और प्रतिष्ठा मनुष्य और मनुष्य के बीच के नैसर्गिक सम्बन्ध को समाप्त कर देते हैं।

उत्तर: प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली-डंडा में बपचन की यादें संजोई गई हैं कहानी बड़े कौशल से इस सच्चाई को चरितार्थ करती है कि पद और प्रतिष्ठा , मनुष्य-मनुष्य के बीच के नैसर्गिक सम्बन्ध को समाप्त कर देती है। कहानी में कथा-नायक और गया दोनों बालसखा हैं। दोनों ही बाल अवस्था में बिना किसी भेदभाव के गुल्ली-डंडा खेलते थे। कथा-नायक जो कि थानेदार का लड़का था , दाँव देने के विवाद में 'गया' के हाथों पिट भी गया था , परन्तु उसने किसी से शिकायत नहीं की बीस साल बाद कथा-नायक जो अब इन्जीनियर हो गया है, उसी गाँव में आता है। यहाँ वह बचपन की समृतियों को सजीव करने के लिए गया से मिलता है और उसके साथ गुल्ली-डंडा खेलना चाहता है। उसके बहुत आग्रह पर गया खेलता तो है लेकिन उसके खेल में बपचन वाली बात कथा-नायक को नजर नहीं आती है। यहाँ कथा-नायक सोचता है कि उसकी अफसरी गया और उसके बीच दीवार बन गई है

प्रश्न 2. कथानायक की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: गुल्ली-डंडा कहानी के कथानायक की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. प्रेम और समानता – कथानायक के मन में अपने मित्रों के प्रति प्रेम की भावना है। वह सभी को समान समझता है तथा मिलजुलकर उनके साथ रहता है और खेलता है। अपनी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के कारण वह स्वयं को ऊँचा तथा दूसरों को नीचा नहीं समझता।

2. गुल्ली-डंडा का शौकीन – वह गुल्ली-डंडा खेलने का शौकीन है। अपने साथी लड़कों के साथ वह सबेरे से ही खेलने निकल पड़ता है। वह खेल में इतना मस्त रहता है कि खाने-नहाने की भी सुध नहीं रहती। उसके घर पर उसकी प्रतीक्षा होती रहती है।

3. कुशाग्र बुद्धि – वह पढ़ने-लिखने में कुशाग्र है। बड़ा होकर वह इंजीनियर बनता है तथा जिले के अधिकारी पद पर नियुक्त होता है।

4. सामाजिक बंधुओं को मानने वाला- कथा नायक सामाजिक बंधनों को मानने वाला युवक है। वह इंजीनियर के पद पर आसीन हो कर पुनः उसी गांव में आता है जहां वह बचपन में गुल्ली डंडा खेलता था। गया को देखकर उसके मन में उसे गले लगाने की इच्छा तो होती है लेकिन सामाजिक बंधनों के कारण वह ऐसा नहीं कर पाता है।

5. नई जगह देखने को उत्सुक – उसके पिता का तबादला बड़े शहर में हो जाता है। यह जानकर वह खुश होता है। अपने मित्रों से बिछुड़ने की चिन्ता छोड़कर वह नये स्थान देखने को उत्सुक है। वह उस स्थान के बारे में अपने साथियों से डींग हाँकता है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 13 : गुल्ली-डंडा - मुंशी प्रेमचन्द

लेखक परिचय

मुंशी प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई , 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ इनकी माता का नाम आनन्दी देवी एवं पिता का नाम मुंशी अजायबराम था। ये लमही डाकघर में डाकमुंशी थे। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता का तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त होने से इनका बचपन एवं किशोर जीवन संघर्षमय रहा। इनका मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। पढ़ने का शौक इनको बपचन से ही था। 1898 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ पढ़ाई जारी रखते हुए 1910 में इण्टर और 1919 में बी.ए. पास किया बी.ए. करने के पश्चात् आप शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। 1906 में इन्होंने विधवा विवाह का समर्थन करते हुए बाल-विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया। उनके तीन सन्तानें हुई। सोजे वतन पर रोक तथा लेखन बन्द करने के अंग्रेज सरकार के आदेश के बाद मुंशी दयानारायण की सलाह से इन्होंने प्रेमचन्द नाम से लेखन प्रारम्भ किया। यह नाम ही आगे चलकर प्रसिद्ध हो गया उर्दू में लेखन कार्य नवाबराय के नाम से करते रहे थे। उनका अन्तिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' उनकी लम्बी बीमारी एवं तत्पश्चात् निधन के कारण पूरा न हो सका। इनके पुत्र अमृतराय ने इस उपन्यास को पूरा कर पुत्रधर्म का निर्वहण किया।

मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को नाटक, निबन्ध, उपन्यास एवं कहानी जैसी अनेक विधाओं से समृद्ध किया; साथ ही उन्होंने सम्पादन एवं अनुवाद कार्य भी किया परन्तु इनको प्रसिद्धि एक कथाकार एवं उपन्यासकार के रूप में ही मिली। बंगाली के प्रसिद्ध साहित्यकार शरतचन्द्र ने इन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी। प्रेमचन्द तत्पश्चात् 'उपन्यास सम्राट' नाम से प्रसिद्ध रहे। इनका रचना संसार इस प्रकार है -

1. नाटक - 1 'संग्राम (1922 ई.) 2 कर्बला (1928 ई.)

2. निबन्ध / लेख - विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं में प्रेमचन्द के निबन्ध छपते रहे। जिनमें इन्होंने सामाजिक एवं साहित्यिक चिन्ताओं की अभिव्यक्ति की है। प्रेमचन्द के निबन्धों का संकलन 'प्रेमचन्द : विविध प्रसंग जिसके तीन भाग हैं तथा 'प्रेमचन्द: कुछ विचार नाम की पुस्तकों में मिलता है। इनमें से कुछ प्रमुख निबन्ध इस प्रकार हैं

1 साहित्य का उद्देश्य, कहानी कला (भाग 1, 2, 3)
2 हिन्दी उर्दू की एकता
3 महाजनी सभ्यता
4 उपन्यास
5 जीवन में साहित्य का स्थान आदि है।

3. अनुवाद - 1, टॉलस्टॉय की कहानियाँ (1923 ई.)
2 गाल्सवर्दी के तीन नाटकों का
। 'हड़ताल' (1930 ई.)
॥ चाँदी की डिबिया(1931ई.)
॥। 'न्याय (1931 ई.) नाम से अनुवाद किया।

डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार प्रेमचन्द ने कुल 301 कहानियाँ लिखी हैं जिनमें से 3 अभी अप्राप्य हैं। इनकी प्रथम कहानी कौनसी है यह तय करना बड़ा ही कठिन है , फिर भी कुछ विद्वान 'संसार का अनमोल रतन' को प्रेमचन्द की पहली कहानी मानते हैं, तो कुछ 'पंच परमेश्वर' (1916 ई.) को प्रथम कहानी मानते हैं। प्रेमचन्द का पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन' नाम से जून 1908 में प्रकाशित हुआ। इनके जीवनकाल में कुल नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए-

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

1. सप्त सरोज, 2 नवनिधि, 3. प्रेम पूर्णिमा, 4. प्रेम-पचीसी, 5. प्रेम-प्रतिमा, 6. प्रेम-द्वादशी, 7. समर यात्रा, 8 मानसरोवर : भाग 1 व 2 और कफन । कफन प्रेमचन्द की अन्तिम कहानी मानी जाती है। प्रेमचन्द की मृत्यु के पश्चात् इनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' शीर्षक से 8 खण्डों में प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द जी की कहानियों के विकास- क्रम को तीन काल-खण्डों में बाँट सकते हैं- प्रथम-1916 से 1920 तक,

द्वितीय- 1620 से 1930 तक एवं तृतीय-1930 से 1936 तक । इन कालों में कहानियों के अलग-अलग रूप सामने आते हैं।

पत्र-पत्रिकाएँ - 1922 ई. में माधुरी ' पत्रिका का सम्पादन, 1930 ई. में 'हंस' मासिक का प्रारम्भ, प्रकाशन एवं सम्पादन तथा 1932 ई. में 'जागरण' साप्ताहिक का सम्पादन।

उपन्यास - प्रेमचन्द द्वारा कुल पन्द्रह उपन्यास लिखे गए जिनमें से काल क्रमानुसार निम्नांकित प्रमुख हैं - 1. वरदान (अनुदित) (1921 ई.) में, 2. प्रेमा (1907 ई.) 3. रूठी रानी (19 07 ई.). 4. सेवासदन (1918 ई.), 5. प्रेमाश्रम (1921 ई.), 6. रंगभूमि (1925 ई.). 7. कायाकल्प (1926 ई.) 8. निर्मला (1927 ई.) 9. गबन (1931 ई.) 10. कर्मभूमि (1932 ई.), 11 गोदान (1936 ई.) 12. मंगलसूत्र (अधूरा 1948 ई.) में प्रकाशित।

पाठ परिचय

प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली-डंडा में बपचन की यादें संजोई गई हैं कहानी बड़े कौशल से इस सच्चाई को चरितार्थ करती है कि पद और प्रतिष्ठा , मनुष्य-मनुष्य के बीच के नैसर्गिक सम्बन्ध को समाप्त कर देती है। कहानी में कथा-नायक और गया दोनों बालसखा हैं। दोनों ही बाल अवस्था में बिना किसी भेदभाव के गुल्ली-डंडा खेलते थे। कथा-नायक जो कि थानेदार का लड़का था, दाँव देने के विवाद में 'गया' के हाथों पिट भी गया था, परन्तु उसने किसी से शिकायत नहीं की बीस साल बाद कथा-नायक जो अब इन्जीनियर हो गया है, उसी गाँव में आता है। यहाँ वह बचपन की समृतियों को सजीव करने के लिए गया से मिलता है और उसके साथ गुल्ली-डंडा खेलना चाहता है। उसके बहुत आग्रह पर गया खेलता तो है लेकिन उसके खेल में बपचन वाली बात कथा-नायक को नजर नहीं आती है। यहाँ कथा-नायक सोचता है कि उसकी अफसरी गया और उसके बीच दीवार बन गई है यह दर्शाते हुए कहानी समापन हो जाता है।

THE HINDI PAGE जानें कुछ नया www.thehindipage.com

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg